खण्ड-371, अंक-6
सोमवार, 14 श्रावण, शक संवत् 1907
(5 अगस्त, 1985 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 371 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, इलाहबाद , उत्तर प्रदेश (भारत)
1985

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	..	1——
उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री एवं विधान सभाध्यक्ष, श्री बनारसी दास के निधन पर शोकोद्गार	..	3—14

सत्यमेव जयते

प्रतिलिपि अमान्य

उत्तर प्रदेश, विधान सभा

सोमवार, दिनांक 5 अगस्त, 1985

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष श्री निवाज हसन की अध्यक्षता में आरम्भ हुई

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :

अमरनाथ सिंह, श्री (फतेहपुर)
अमीर आलम खां, श्री (मुजफ्फरनगर)
अम्बा प्रसाद वर्मा, श्री (बरेली)
इन्द्रजीत, श्री (फतेहपुर)
इन्द्र प्रताप सिंह, श्री (बहराइच)
ओम प्रकाश रिछारिया, श्री (झांसी)
कमलेश कुमार पाठक, श्री (इटावा)
काजी मोहिउद्दीन, श्री (सहारनपुर)
काशी सिंह ऐरी, श्री (पिथौरागढ़)
कृष्ण कुमार शर्मा, श्री (गाजियाबाद)
कृष्णा रावत, कुमारी (लखनऊ)
खान गुफरान जाहिदी, श्री (फतेहपुर)
गंगा स्वरूप भटनागर, श्री (सीतापुर)
गौरी शंकर, श्री (इटावा)
चन्द्र भान मौर्य, श्री (आगरा)
चन्द्र सेन, श्री (जौनपुर)
जयदीप सिंह बरार, श्री (बरेली)
जय नारायण शर्मा, श्री (मेरठ)
जयराम वर्मा, श्री (फैजाबाद)
जवाहर सिंह यादव, श्री (इलाहाबाद)
तिलक सिंह, श्री (अलीगढ़)
दीपक कुमार, श्री (मुजफ्फरनगर)
दुर्गा प्रसाद यादव, श्री (आजमगढ़)
नरेन्द्र सिंह, चौधरी (कानपुर)
नेक चन्द्र पान्डेय, (कानपुर)
पद्मा सेठ, श्रीमती (सीतापुर)
प्रवीण कुमार शर्मा, श्री (बुलन्दशहर)
फजले मसूद, श्री (देवरिया)
फागू चौहान, श्री (आजमगढ़)
बलदेव सिंह, कैप्टेन (अलीगढ़)
बलराम यादव, श्री (आजमगढ़)
बलदेव सिंह आर्य, श्री (उत्तरकाशी)
बसन्त सिंह गहलोत, श्री (बिजनौर)
बहादुर सिंह, श्री (आगरा)
भगौती प्रसाद, चौधरी (मिर्जापुर)
भृगुनाथ भट्ट, श्री (गोरखपुर)
मंगलदेव, श्री (गोंडा)
मानपाल सिंह, एडवोकेट, श्री (एटा)
मैनेजर सिंह, श्री (बलिया)
राजीव कुमार सिंह, श्री (बाराबंकी)
राजेश कुमार खैरा, श्री (ललितपुर)
राम आसरे, श्री (सुलतानपुर)
रामनरेश शुक्ल, श्री (प्रतापगढ़)
राम रतन सिंह, श्री (सीतापुर)
लक्ष्मी नारायण, श्री (मथुरा)
लोकपति त्रिपाठी, श्री (मिर्जापुर)
विमला राकेश, श्रीमती (सहारनपुर)
विलायती राम कत्याल, श्री (कानपुर)
वीर बहादुर सिंह, श्री (गोरखपुर)
वीरेन्द्र नाथ दीक्षित, श्री (कानपुर)
वीरेन्द्र प्रताप शाही, श्री (गोरखपुर)
वीरेन्द्र सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)
शिव बालक पासी, श्री (रायबरेली)
शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री (गोरखपुर)
शूरवीर सिंह सजवाण, श्री (टेहरी-गढ़वाल)
सखावत हुसैन, श्री (गाजियाबाद)
सत्य प्रकाश विकल, श्री (आगरा)
समरपाल सिंह, श्री (मुरादाबाद)
सुखदा मिश्र, श्रीमती (इटावा)
सुनील शास्त्री, श्री (गोरखपुर)
सुरेन्द्र कपिल, श्री (सहारनपुर)
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री (अलीगढ़)
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती (लखनऊ)
हर नारायन सिंह, श्री (रायबरेली)
हरशरन सिंह, श्री (मेरठ)
हरिशंकर तिवारी, श्री (गोरखपुर)
हरेन्द्र सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)

पीठ--श्री अरुण कुमार सिंह--सहकारिता मन्त्री ।

प्रेमचंद अग्रवाल

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री एवं विधान सभाध्यक्ष, श्री बनारसी दास के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मन्त्री (श्री नारायन दत्त)--

श्रीमन्, मुझे अत्यन्त दुख के साथ आपकी आज्ञा से इस सदन को यह अत्यन्त शोकपूर्ण समाचार देने के कर्त्तव्य का निर्वहन करना पड़ रहा है कि हमारे प्रदेश के राजनीति के स्तम्भ, वरिष्ठतम् नेताओं में से एक, स्वतन्त्रता-संग्राम के एक महान सेनानी, अप्रतिम देश सेवक, संसदीय विषयों के ज्ञाता, कुशल राजनीतिज्ञ और प्रदेश के विकास के लिए समर्पित एक महान् व्यक्तित्व श्री बनारसी दास जी का निधन हो गया। परसों 3 अगस्त को लगभग 4·30 बजे अपराह्न बलरामपुर अस्पताल में वह घड़ी आई, जिसको हम सबको कल्पना भी नहीं थी।

श्रीमन्, बनारसी दास जी का अनथक व्यक्तित्व, ऊर्जा से भरा व्यक्तित्व, निरन्तर कार्यकुशल व्यक्तित्व, हम नहीं समझते थे कि बीमारी से संघर्ष इस बार इन्हें पराजित कर देगा और हमसे छीन लेगा। हम समझते थे कि सदैव की तरह मुस्कराते हुए दृढ़ प्रतिज्ञ और दृढ़ विश्वासी श्री बनारसी दास जी रोग को इस बार भी पछाड़ देंगे लेकिन विधना को यह स्वीकार नहीं था और वे हमको छोड़ कर चले गये।

श्रीमन्, मुझ सेवक को पहली बार 1952 में उन्हें सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, तब उन्होंने राज्यपाल के अभिभाषण में शासकदल की ओर से धन्यवाद का प्रस्ताव पेश किया था। इस समय मेरा उनसे सुपरिचय हुआ था, उनके व्यक्तित्व की कई झलकियां, जैसा श्रीमन्, आपको भी अपने दीर्घ अनुभवों और राजनैतिक जीवन में देखने को मिली होंगी, मुझे देखने को मिली। एक-एक दिन में उनके व्यक्तित्व की कई झलकियां देखने को मुझे मिली।

श्रीमन्, बनारसी दास जी का जन्म बुलन्दशहर के अतरावली गांव में 8 जुलाई, 1912 को हुआ था। अपने बाल्यकाल से और विद्यार्थी काल से उन्हें स्वतन्त्रता संग्राम के प्रति एक अविस्मरणीय आकर्षण ने जकड़ लिया। 1930 में पढ़ाई-लिखाई छोड़ कर वे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। सन् 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह और 1942 के नजरबन्द काल में वह देश की आजादी की लड़ाई के एक प्रमुख सैनिक के रूप में उन्होंने बुलन्दशहर जिले से देश की आजादी की लड़ाई में योगदान दिया। सन् 1946 में वे निर्विरोध उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए चुने गये और तब से लगातार इस सदन के माध्यम से कुछ बीच के समयों को छोड़कर यह सदन उनके व्यक्तित्व से, उनकी गरिमा से, उनकी संसदीयता से, उनकी जानकारी से चमत्कृत होता रहा। श्रीमन्, माननीय श्री चन्द्र भानु गुप्ता जी, जो इस प्रदेश के लौह पुरुष थे, उनकी लौह पुरुषता में बनारसी दास जी की जो लौहपुरुषता थी, उसका भी बड़ा योगदान रहा और हम लोग जो इस सदन में बैठे हैं सदन के बाहर, अन्दर, दिन प्रतिदिन की सारी घटनाएं याद आती हैं जिसमें बनारसी दास की संगठन शक्ति, कृतित्व का योगदान उनकी राजनैतिक घटनाओं में, प्रदेश के विकास में देखने को मिलता है। अगर पुरानी कार्यवाही को देखें तो वह भी बनारसी दास जी की योग्यता, शासकीय क्षमता और उनकी चुटकियों से भी ज्यादा उदाहरण इस सदन की कार्यवाही में देखने को मिलेंगे। राज्य सभा के भी वह सम्मानित सदस्य रहे और लोक सभा के लिए भी वह चुने गये। लोक सभा और राज्य सभा भी उनकी जानकारी से लाभान्वित रही।

1977 में जनता शासन काल के अवसर पर यहां पर अध्यक्ष विधान सभा के रूप में उन्होंने इस पद की गरिमा बढ़ाई जहां पर आप सुशोभित हैं। 12

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जुलाई, 1977 को वह उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष चुने गये और 26 फरवरी, 1979 तक वह उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष बने रहे। श्रीमन्, उस समय, एक कठिन समय में उन्होंने इस सम्मानित सदन की अध्यक्षता की। मुझे उस समय श्रीमन्, नेता विरोधी दल के रूप में इस सदन की सेवा करने का अवसर मिला था और खास तौर से विरोधी दल के नेता के पद का और संख्या की कमी होते हुए भी उन्होंने इस सदन में विचार व्यक्त करने के लिए अवसर, उचित अवसर दिया, नियमों का अनुपालन भी कराया और सख्ती के साथ कराया लेकिन जो समुचित अवसर होता था, वह उन्होंने सदैव दिया। समिति का भी नेतृत्व प्रदान किया अध्यक्ष होने के नाते और तत्पश्चात् वह उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री नियुक्त हुये निर्वाचन के बाद और एक समय में उन्होंने लगभग सवा वर्ष तक मुख्य सेवक के रूप में मुख्य मन्त्री के रूप में कार्य किया। श्रीमन्, वह क्षण भी मुझे याद आता है जब नेता सदन के रूप में और नेता विरोधी दल के रूप में पारस्परिक विचार विमर्श करने का, बातें करने का भी अवसर मिला।

मैं समझता हूं कि उस समय भी उन्होंने जिस प्रकार से मुख्य मंत्री पद की गरिमा को निभाने की चेष्टा की, उसे निभाया, वह भी हमारे प्रदेश के एक अध्याय के रूप में याद किया जायगा। जो उन्होंने कार्य किए बुलन्दशहर जनपद के, प्रदेश के, वह प्रदेश के ही नहीं एक देश के नेता थे। उनकी छाप व्यक्तित्व की, स्वाभाविक है। वह प्रतिनिधि आज से नहीं सन् 40वें दशक से थे। उत्तर प्रदेश में बनारसी दास जी का नाम एक उच्च कोटि के संगठनकर्त्ता के रूप में, जन-नायक के रूप में, पार्लियामेन्टेरियन के रूप में, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में याद किया जायगा। जहां वह बहुत ही प्रबल, संकल्प के धनी थे, वहीं वह अपने विरोधियों के लिए बहुत मृदुल थे। यह प्रजातांत्रिक, उनकी जीवन शैली थी। हमें उनसे बहुत सी अपेक्षायें थीं कि उनका नेतृत्व हमें आशीर्वाद देता रहेगा और हमें सलाह मिलती रहेगी। इस बीच में भी कई अवसर आये कि मुझे उनसे सलाह लेने का मौका मिला, लेकिन अचानक जिस असाध्य बीमारी ने उनको ग्रसित कर लिया, उसकी जानकारी भी नहीं थी और विश्वास भी नहीं होता था, जिसके कारण वह आज हमारे बीच में नहीं रहे।

मेरा विनम्र अनुरोध है कि हमारे इस दल की ओर से, जिसको उन्होंने आजीवन अपने कृतित्व से शोभा बढ़ाई, उसकी ओर से और इस सम्मानित सदन की ओर से, जिसके 3 दशकों से अधिक से वे सदस्य रहे, 1946 से यानी लगभग 39 वर्ष या लगभग 4 दशक तक इस सदन की शोभा बढ़ाई, मैं आपसे आग्रह करूंगा कि ऐसी विभूति के पलायन से हम दुखित हैं और ऐसी विभूति को याद में सिर नवाते हैं और आपसे आग्रह करते हैं कि श्रद्धांजलि के इन शब्दों को उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। चूंकि उन्होंने एक विधान सभाध्यक्ष और मुख्य मंत्री के रूप में दोनों पदों को सुशोभित किया और दीर्घकाल तक राजनीति में रहे, इसलिए मैं आग्रह करूंगा कि आज उनकी स्मृति में सदन की आगे की कार्यवाही को स्थगित कर दें और कल मिलें।

श्री मुलायम सिंह यादव--

माननीय, आज हम एक ऐसे नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करने जा रहे हैं, जिनकी सेवाओं के बारे में शब्दों से वर्णन करना सम्भव नहीं है। मुझे भी उनके साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे जब मुख्य मंत्री थे और उससे पहले इस सदन के अध्यक्ष भी रहे, जिन-जिन पदों पर वे रहे, उन्होंने एक अलग छाप छोड़ी। माननीय नेता सदन ने उनके व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ बताया लेकिन फिर भी आज सबसे बड़ा दुख इस बात का है कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की कतार धीरे-धीरे

इस देश से समाप्त हो रही है और एक नया अध्याय आया है, जो हमारे देश के हमारे इतिहास के गौरवशाली लोगों को हमसे जोड़ने वाली कड़ी को हमारे बीच से उठाता जा रहा है। हमारे बीच उनके कार्य, उनके आदर्श बचे हैं। उन्हीं को लेकर हम इस महान देश की सेवा करने का व्रत लें, इस अवसर पर इस सदन के सब लोगों से मेरा निवेदन है।

उनके पास ज्ञान का अपार भंडार था हालांकि कालेज और विद्यालयों की शिक्षा प्राप्त करने का उनको बहुत बड़ा अवसर नहीं मिला क्योंकि वे 16 साल की उम्र में ही स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़े थे और उन्होंने अपनी शिक्षा की परवाह नहीं की। विद्यालयी शिक्षा ज्यादा समय तक प्राप्त न कर पाने के बाद भी उनके पास ज्ञान का अपार भंडार था, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत सबके ही वह बहुत अच्छे ज्ञाता थे। मान्यवर, वे बहुत बड़े कुशल प्रशासक थे, शीघ्र निर्णय लेने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। वे महान देश भक्त थे, उसके साथ ही साथ बड़ी-बड़ी समस्याओं के सामने निर्भीकता और साहस का उन्होंने कई बार परिचय दिया। "सादा जीवन और उच्च विचार" की कहावत उन पर चरितार्थ होता थी।

मान्यवर, वे कितने प्रजातांत्रिक परम्पराओं के मानने वाले थे, इसका मैं एक संस्मरण आपके सामने रख कर बतलाता हूं कि जब 1980 में मैं लोकदल का अध्यक्ष बना, उस समय बाबू बनारसी दास जी कोषाध्यक्ष बनाये गये। कोषाध्यक्ष के रूप में बाबू बनारसी दास जी का नाम सुन कर मुझे बड़ा संकोच लगा। जब उनका नाम कोषाध्यक्ष के रूप में आया और वे इस पद पर नियुक्त हुए तो मैं उनसे मिलने उनके घर पर गया। तो मान्यवर, मुझे देखकर वे खड़े हो गये। मैंने उनसे हाथ पकड़ कर कहा कि आप मुझे शर्मिन्दा मत करिये। उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर कहा कि मैं मुलायम सिंह के लिए नहीं बल्कि लोकदल के अध्यक्ष के लिए खड़ा हुआ हूं। प्रजातांत्रिक परम्पराओं की मान्यताओं के लिए इन पुराने गांधीवादी लोगों में कितना बड़ा आत्मबल था, कितना बड़ा दिल था और कितना बड़ा मन था।

मान्यवर, आज जहां आप बैठे हैं उसी कुर्सी पर वे भी बैठे थे। मैंने कोआपरेटिव मिनिस्टर की हैसियत से कुछ संशोधन कोआपरेटिव मूवमेन्ट के लिए पेश किये, उसमें मैं कुछ गलत कर रहा था। उन्होंने चेयर से ही मुझे टोका और कहा कि आप इस पर पुनः विचार करिये। मैंने भी वहीं से इशारा किया कि आप ही बतला दीजिये, आपसे बड़ा कोआपरेटिव को जानने वाला यहां कौन है?

सन् 1965 में उन्होंने इस प्रदेश की सहकारिता के विषय को बराबर आगे बढ़ाने के लिए सहकारिता आन्दोलन को नई दिशा देने के लिए उन्होंने एक ऐक्ट का संशोधन किया था। सहकारिता आन्दोलन का सबसे बड़ा इरादा रखने वाले नेताओं में से वे एक थे।

मान्यवर, उनके बारे में जैसा कि मैंने शुरू में ही कहा, शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। वे बहुत बड़े संगठनकर्त्ता थे। वे चाहे जिस दल में रहे, कोई भी संगठन का कार्य जब उनके सुपुर्द किया जाता था तो वे सबसे अच्छे साबित होते थे।

मान्यवर, मैं इसी बीच में तीन बार उनसे मिला। लेकिन आज के सामाजिक और राजनैतिक मूल्य गिरते जा रहे हैं उनके लिए वे बहुत चिन्तित थे। मैं जब डाक्टर लोहिया अस्पताल में दिल्ली में उनसे मिला तो वे देश के लिये व्याकुल थे, कहते थे कि क्या होगा? मान्यवर, मैंने उनको धीरज बंधाया कि आप स्वस्थ होंगे, लेकिन मैं उसी दिन समझ गया था कि उनके मन में कुछ दहशत हो गई है। उत्तर प्रदेश विधान परिषद के जो वरिष्ठ सदस्य हैं, अवस्थी जी जब मैं उनके पास पहुंचा तो मैंने कहा

कि लगता है कि आज बाबू जी का मनोबल टूट रहा है । पता नहीं, जब मैं उनसे एक दिन पहले मिलने गया था तो उन्होंने देश की राजनीति के बारे में बहुत चर्चा की थी । लेकिन आज मेरा हाथ पकड़ कर धीरे से रख दिया था और अपनी आंखें मूंद लीं और मैं वहां से वापस चला आया । मैं मौन होकर तुरन्त वहां से वापस चला आया, तब आकर मान्यवर, मैंने सदन के माननीय नेता सदन के द्वारा उनके स्वास्थ्य के बारे में जानना चाहा। उसके बाद माननीय नेता सदन ने उनके स्वास्थ्य के लिए, इलाज के लिए विशेष चिन्ता की । मान्यवर, ऐसे महान् नेता आज हमारे बीच से उठ गये, उससे सारा प्रदेश और सारा देश स्तब्ध है ।

मैं आज आपके माध्यम से, अपने सभी इधर के बैठे हुए अपने साथियों की ओर से अपनी संवेदना शोक संतप्त परिवार के लिए अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके जितने भी दुःखी परिवार, मित्र, सम्बन्धी, जो भी हों, हमारी संवेदना और सभी साथियों की ओर से, पहुंचाने की कृपा करें । आज हम अपने सभी सदन के महानुभावों से प्रार्थना करते हैं कि वह स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, महान् सेनानी ऐसे लोगों के जीवन से हम कुछ सीखने का संकल्प लें ।

कुंवर रेवती रमण सिंह--

मान्यवर, आज हम बाबू बनारसी दास जी को श्रद्धान्जलि देने के लिए खड़े हुए हैं और नेता सदन और नेता विरोधीदल ने जो कहा है, उससे अपने को सम्बद्ध करते हैं । मान्यवर, यह विश्वास ही नहीं होता कि आज हमारे बीच में बाबू बनारसी दास जी नहीं हैं । वह ऐसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे अगर उनके जीवन को देखें तो लगातार जहां से उन्होंने शुरू किया और जहां अन्त हुआ, वह कुछ न कुछ करते रहे । मान्यवर, इतने सारे पदों को सम्भवतः इस प्रदेश में और किसी नेता ने शायद सुशोभित नहीं किया होगा । वह पार्लियामेन्ट्री सेक्रेट्री रहे, राज्य मंत्री रहे, कैबिनेट मंत्री रहे, मुख्य मंत्री हुए और मान्यवर, उस पीठ पर जहां आप विराजमान हैं, उस पीठ को भी उन्होंने सुशोभित किया । मान्यवर, इतना ही नहीं वह राज्य सभा के भी और लोक-सभा के सदस्य चुने गये । सम्भवतः हमारे प्रदेश का कोई भी नेता इतने सारे पदों पर सुशोभायमान नहीं हुआ है ।

मान्यवर, बाबू बनारसी दास जी से मेरा परिचय सन् 69 में हुआ था । अभी आज भी ऐसा लगता है कि उनका मुस्कराता हुआ चेहरा, हमेशा याद रहता है, अभी आपके बीच में आ जायेगा । मान्यवर, उनके जैसे पार्लियामेन्टेरियन, संसदीय पद्धति का ज्ञाता, बहुत कम लोग बचे हैं । मान्यवर, जब उस पीठ पर वह विराजमान थे तो मान्यवर, मुझे याद है कि कभी-कभी माननीय मुख्य मंत्री जी को भी संस्मरण होगा कि जब वह विरोधी दल के नेता की हैसियत से बैठते थे जब कोई ऐसा मामला आ जाता था, बाबू जी खड़े होकर घंटों कभी-कभी इस पूरे सदन का ज्ञानवर्द्धन करते थे । मान्यवर, उनको इतना ज्ञान था, संसदीय प्रणाली का और इतना ज्यादा उनका अपनी भाषा पर नियंत्रण था, बहुत कम लोग बचे हैं और बिरले ही ऐसे व्यक्ति हों जो कि इस कमी को पूरा कर सकते हों । मान्यवर, बाबू बनारसी दास जी में बहुत से गुण समाहित थे । कोई भी मसला हो, कोई भी समस्या हो अगर कोई उनके पास जाता था, चाहे वह प्रशासनिक हो या दूसरा हो, उसका निराकरण जिस खूबी से करते थे, मुझे अनुभव है, जब वह प्रदेश के मुख्य मंत्री थे, मुझे उनके सहयोगी के रूप में काम करने का मौका मिला था । मैंने देखा जिस दृढ़ता से और जिस प्रशासनिक कुशलता से वह निर्णय लेते, वह अन्य लोगों में नहीं मिलती है ।

बिजली की एक घटना सुनाना चाहूंगा, उस समय हड़ताल चल रही

थी, जो सहयोग उन्होंने दिया और जिस तरह से उसका सामना करने के लिये उसमें उन्होंने अपनी दिलचस्पी दिखायी, शायद यह प्रदेश उनकी सेवाओं से उऋण नहीं होगा। उन्होंने इस प्रदेश के बहुत से पदों पर रहकर और बिना पदों पर रह कर इस प्रदेश की बहुत सेवा की है।

मान्यवर, आज ऐसे व्यक्तित्व के प्रति जो आज हमारे बीच में नहीं हैं, हम सभी लोगों का मन उनके कृत्यों से, उनके कार्यकलापों को याद करके भर जाता है, और उनको बहुत क्षेत्रों में देन है और मान्यवर, जब वह अध्यक्ष थे तो एक देन उनकी नियम 301 की है, जो आज हाउस में बहुत प्रचलित है, वह बनारसी दास जी की देन है। उन्होंने यह देखकर कि बहुत से महत्वपूर्ण मसले आते हैं जो नियम 56 में, नियम 51 और 52 में नहीं आ पाते, उनकी पूर्ति के लिये, उस कमी को दूर करने के लिये नियम 301 लागू किया था। मान्यवर, ऐसे स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानी की पीढ़ी जो आज प्रायः लुप्त होती जा रही है और गांधीवादी परम्परा के मानने वालों की आखिरी कड़ी में थे। मुझे लगता है कि आने वाले दिनों में उत्तर प्रदेश के इतिहास में उनका नाम प्रमुख रूप से लिखा जायेगा।

मैं एक घटना की ओर जैसा नेता सदन ने कहा कि गुप्ता जी के साथ संगठन में मदद करके उन्होंने बड़ी भारी भूमिका अदा की। मुझे याद है, हालांकि बहुत छोटा था। एक घटना हुई, जब सम्पूर्णानन्द जी मुख्य मंत्री थे, उन्होंने वक्तव्य दिया कि अगर संगठन के चुनाव में हमारी पराजय होती है, तो इस्तीफा दे दूंगा और मुनीश्वर दत्त उपाध्याय अध्यक्ष पद के लिये प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का चुनाव लड़ रहे थे, उसमें जो सत्ता पार्टी थी, उसके जो मुख्य मंत्री थे, उनकी ओर से और गुप्ता जी स्वयं चुनाव लड़ रहे थे। दूसरी तरफ से मान्यवर, हाफिज मो० इब्राहिम, लाल बहादुर शास्त्री, गोविन्द बल्लभ पन्त ऐसे कई नेता उत्तर प्रदेश के केन्द्र में विराजमान थे। वह अपने में बेमिसाल चुनाव हुआ था और स्टेडियम में हुआ था, हजारों की संख्या में दर्शक लोग खड़े थे और उस चुनाव में बनारसी दास जी की भूमिका बड़ी अहम भूमिका थी, उसका नतीजा जो भी आया, सभी को मालूम है, लेकिन उन्होंने दिखा दिया था कि उनमें संगठन की कितनी शक्ति है, ऐसे व्यक्तित्व के लिये जैसा नेता विरोधी दल ने कहा शब्दों से उनको श्रद्धान्जलि देना सम्भव नहीं है। फिर भी मान्यवर, मैं अपनी तथा अपने दल की तरफ से आपसे आग्रह करूंगा कि उनके शोक संतप्त परिवार को श्रद्धान्जलि भेजने का कष्ट करें।

श्री कल्याण सिंह—

मान्यवर, उपनिषद् की सूक्ति है "चरैवेति चरैवेति" यानी चलते ही रहो चलते ही रहो। मान्यवर, इस सूक्ति द्वारा अपने जीवन को व्यवहारिक रूप देने का काम यदि किसी ने किया तो वह श्रद्धेय स्व० बाबू बनारसी दास जी ने किया, 1930 से लेकर मृत्यु पर्यन्त उन्होंने इस सूक्ति को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। वे चलते ही रहे और कभी थके नहीं। उनका व्यक्तित्व सर्वतोन्मुखी था उनमें संगठनात्मक शक्ति अद्भुत थी। निर्णय लेने की क्षमता भी अद्वितीय थी। उनकी प्रशासन पर पकड़ भी अद्वितीय थी। वे विभिन्न पदों पर रहे और जो भी उत्तरदायित्व उन पर आया उसका निर्वहन उन्होंने बड़ी सूझबूझ के साथ और शालीनता के साथ किया। कदाचित् ही कोई महान् ऐसे व्यक्ति हैं जो इतने विभिन्न पदों पर इतने लम्बे काल तक प्रदेश की सेवा में रत रहे हैं। एक बात से कष्ट अवश्य होता है और चिंता भी होती है कि उस पीढ़ी के लोग जिसने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों की चिंता किये बगैर अपने व्यक्तिगत जीवन की सुख-सुविधाओं को तिलांजलि देते हुए, अपने परिवार को कष्ट देते हुए, अपने इस प्यारे देश को विदेशी शक्ति से

आजाद कराया और हमारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया । वह पीढ़ी हमारे लिए अभिनन्दनीय और बन्दनीय है परन्तु आज एक-एक करके ऐसी महान् विभूतियां हमारे बीच से उठती जा रही हैं और आज सामाजिक और राजनीतिक जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, भाषा बदल रही है, परिभाषा बदल रही है ।

आज हमारी इस नयी पीढ़ी को इससे मार्ग-दर्शन लेना चाहिये जिसकी आज के समय में बहुत आवश्यकता है । चिंता आज इस बात की है कि इस कोलाहल-पूर्ण युग में जहां नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, अस्थिरता सामाजिक जीवन में व्याप्त हो रही है तो इस नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा देने वाली कड़ी थे जो आज हमारे बीच से उठ गये हैं । बाबू बनारसीदास जी ने जिस किसी काम को अपने हाथ में लिया उसे बड़ी सफलता के साथ संचालित किया । मेरा जो निर्वाचन क्षेत्र है उसकी सीमा बुलन्दशहर से जुड़ी हुई है, मेरा उनसे निकट का सम्बन्ध रहा है । आज गांव के सभी लोगों के साथ बात करने के बाद ऐसा लगता है और गांव के लोग महसूस कर रहे हैं कि बाबू बनारसीदास जो उन्हीं को सबसे ज्यादा प्यार करते थे, शहर के किसी व्यक्ति से बात करते हैं, तो उससे बात करने के बाद ऐसा लगता है कि बाबू बनारसी दास उसी को सबसे ज्यादा प्यार करते थे । तो ऐसी अद्भुत शक्ति किसी ही व्यक्ति में होती है जो दूसरे को यह महसूस करा दे कि यह सबसे ज्यादा प्यार मुझको करते हैं । यह विशेषता उनकी थी ।

उन्होंने इस प्रदेश की जनता की विभिन्न पदों पर रह कर सेवा की । ऐसे व्यक्ति की शब्दों में विवेचना नहीं की जा सकती है । हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि ऐसे महान व्यक्तियों के जीवन से प्रेरणा लेकर यह नयी पीढ़ी इस प्रदेश और देश के लिए निस्वार्थ भाव से सेवा करने में जुटे ऐसा शक्ति इस पीढ़ी को दे । इन शब्दों के साथ उस महान व्यक्ति के प्रति मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता जनता पार्टी ने जो श्रद्धा भाव बाबू बनारसी दास जी के प्रति व्यक्त किये हैं उनके साथ मैं अपने को और अपने दल को संबद्ध करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी भावना और संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री कौशिक रमाशंकर--

मान्यवर, बाबू बनारसी दास के निधन पर जो भाव माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल, माननीय नेता जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी ने व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, बाबू बनारसी दास जी उत्तर प्रदेश की राजनीति में यों तो आधी सदी तक सक्रिय रहे लेकिन निश्चित रूप से 30 वर्षों तक तो उत्तर प्रदेश की राजनीति में वे एक स्तम्भ के रूप में रहे । मान्यवर, बाबू बनारसी दास जी के नजदीक आने का मुझे जो शुभ अवसर प्राप्त हुआ वह 1967 से प्राप्त हुआ और धीरे-धीरे वह बढ़तर ही रहा । उनके नेतृत्व में संभा परिषद् में कार्य करने का भी मुझे शुभ अवसर प्राप्त हुआ । मान्यवर, अद्भुत स्मृति के वह धनी थे । इतनी विलक्षण स्मृति के व्यक्ति बहुत ही कम होते जितनी समृद्ध स्मृति बाबू बनारसी दास जी की थी । अपने संवेगों को न छिपाने का उनका अद्भुत गुण था, इसलिए वह स्पष्टवादी भी थे । मान्यवर, किन्हीं समस्याओं के निराकरण करने के सम्बन्ध में, किन्हीं मसलों पर निर्णय लेने की तत्परता जो उनमें थी वैसी बहुत कम लोगों में होती है । शीघ्रता से निर्णय वह ले लेते थे वह अद्भुत बात थी । मान्यवर, बनारसी दास जी के ऐसे विलक्षण गुणों से हम सभी लोगों को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी । उनके चले जाने से हमारे उत्तर प्रदेश की अपार

क्षति हुई है । उसकी पूर्ति न जाने कितने वर्षों बाद होगी । ऐसे गुणों के धनी उस व्यक्ति के प्रति मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हम लोगों की संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री सुरेन्द्र पाल वर्मा--

मान्यवर, 3 अगस्त को बाबू बनारसी दास जी के निधन से पूरा प्रदेश शोक में डूब गया । मान्यवर, हमने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल राजनीतिज्ञ और एक समाज सुधारक अपने बीच से खो दिया । मान्यवर, सर्व प्रथम 1946 में वह निर्विरोध माननीय सदन के सदस्य चुने गये थे, उसके बाद 1952 से 1957 और फिर 1962 से 1967 तक वे इस माननीय सदन के सदस्य रहे। वर्ष 1977 में उन्होंने इस माननीय सदन के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया और उसके बाद नेता सदन के रूप में वह रहे । इस बीच में भी उनके साथ 1977 में इस माननीय सदन का सदस्य रहा, तो देखा कि वे एक अत्यन्त कार्यकुशल, कर्मठ राजनीतिज्ञ थे । वह हमारा संघर्ष नामक पत्रिका के सम्पादक भी रहे ।

मान्यवर, मैं माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता जनता पार्टी, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी की भावनाओं से अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हम लोगों की संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करेंगे ।

*श्री फजलुल बारी--

मान्यवर, बाबू बनारसी दास का इन्तकाल हो गया, यकीन नहीं आता । जिन जज्बात और ख्यालात का इजहार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य नेताओं ने किया है, उनसे अपने को जोड़ते हुए मैं कहना चाहता हूं कि बाबू बनारसी दास एक शख्सियत नहीं एक स्कूल थे और उस स्कूल के शागिर्द आपको हर मैदान में मिलेंगे । बाबू बनारसी दास के जहां बहुत से कार्य हैं, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का फरजन्द होने के नाते में समझता हूं कि मैं आज उस एहसान की याद दिलाऊं जो उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी पर किया है । जब 1973 में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अकलियती किरदार और जम्हूरी किरदार को खत्म करने वाला एक बिल राज्य सभा में आया तो राज्य सभा में बाबू बनारसी दास ने उसके खिलाफ बेहतरीन वकालत करके उस बिल के डिफेन्ड्स का इजहार किया था । उनका यह काम अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी हमेशा याद रखेगी । मैं आपसे गुजारिश करूंगा कि आप मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से उनके शोगवार खानदान की हमारे खिराजे यकीदत के अल्फाज को पहुंचाने की जहमत करें ।

श्री राज किशोर सिंह--

मान्यवर, बाबू बनारसी दास के निधन से पूरा प्रदेश शोकाकुल है । हम लोग उसी शोक के पर्यावरण में, वातावरण में यहां सदन में बैठे हुए हैं । हम लोगों ने स्वतन्त्रता संग्राम के एक महान योद्धा को खो दिया है । जैसा नेता सदन ने और नेता विरोधी दल ने तथा अन्य विरोधी दल के नेताओं ने उनके जीवन के बारे में कहा है, सचमुच वह अनुकरणीय है । उनका जीवन आदर्शों से भरा हुआ था । हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी कि हम उनके आदर्शों और उनकी डेडीकेटेड लाइफ और उनके समर्पित जीवन से सबक लें । अपने प्रदेश के राजनैतिक और सामाजिक उत्थान और प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए हम आज सब कृत संकल्प हैं, वह उन्हीं के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे, आजादी की लड़ाई से लेकर लगातार अपने अन्तिम समय तक भी वह इसके लिए प्रदेश की

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

राजनीति से संलग्न थे। उन्होंने कई मर्तबे अपने प्रदेश में कई पदों को विभूषित किया था। जैसा कि हमारे नेता सदन ने जिक्र किया है, उनके जीवन के बारे में जो कुछ कहा गया है वह बहुत कम है। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि अब स्वतन्त्रता संग्राम की पहली पीढ़ी धीरे-धीरे हम लोगों का साथ छोड़ रही है। उनके निधन से हमारे प्रदेश की अपूर्णीय क्षति हुई है। मैं अपने को और अपनी पार्टी को, जो हमारे नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य नेताओं ने विचार व्यक्त किये हैं, जो भावनाएं प्रगट की हैं, उनसे सम्बद्ध करता हूं। अन्त में मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपके माध्यम से उस शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी संवेदना भेजने के लिए आपसे आग्रह करता हूं।

श्री राम नरेश--

माननीय, आज सदन, बाबू बनारसी दास के निधन से बहुत दुखी है और इस सम्बन्ध में नेता सदन ने, नेता विरोधी दल ने और अन्य दूसरे नेताओं ने जो अपने उद्गार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं।

माननीय, आज की राजनीति में, जिस प्रकार से जीवन के सभी क्षेत्रों में अगर किसी का गहन अध्ययन रहा है और उस अध्ययन के आधार पर जिस तरह का कार्य वह करते रहे हैं, अगर हमारा ध्यान उधर जाता है, तो उसमें हम बाबू बनारसी दास जी को अग्रिम पंक्ति में पाते हैं। हम यह भी समझते हैं कि जिस तरह से निरन्तर 55 वर्षों तक के राजनीतिक जीवन में, उन्होंने प्रदेश, देश और समाज को जो दिया, विभिन्न पदों पर रहकर, सरकारी और गैर सरकारी पदों पर उसे इस प्रदेश और देश की जनता कभी नहीं भूल सकती। मैं इसलिये और भी कहना चाहता हूं कि सन् 52 के पहले चुनाव के पश्चात् स्वनाम धन्य पंडित गोविंद बल्लभ पन्त जी ने उनकी संघर्षशीलता, उनकी कर्मठता और स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान जिस तरह वह उससे जुड़े थे उसको उन्होंने परखा और समझा और उन्हें सभा सचिव से रूप में अपने साथ रखा। इस प्रदेश के प्रति उनकी जो सेवायें रही हैं वह इस सदन को और इस प्रदेश की जनता को अच्छी तरह से मालूम हैं।

सन 1930 में उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। उसके बाद मंत्रिमंडल में रहकर कई बिभागों को देखते हुए उन्होंने जिस तरह से काम किया है वह इस प्रदेश की जनता अच्छी तरह से जानती है। मैं यह इसलिये और भी कहना चाहता हूं कि 1977 का समय था, देश ने एक अंगड़ाई ली थी और उस काले इतिहास के पन्नों को धोने का काम किया था और एक नयी सरकार बनी थी और सरकार बनने पर इसी सदन में अध्यक्ष की हैसियत से, माननीय, जिस पीठ पर आप बैठे हुए हैं, वहां पर बैठकर उन्होंने जो व्यवस्थायें दी हैं, समय-समय पर जो प्रश्न आते थे, उन पर जो उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये थे, आने वाले दिनों में जो नवयुवक आयेंगे इस विधान सभा के सदस्य के रूप में, वह जब उसको पढ़ेंगे, तो वह अनुभव करेंगे कि किस तरह से उनकी संसदीय प्रक्रिया और नियमों में गहरी पैठ थी और वह कितने अच्छे ज्ञाता तथा निष्णात पंडित थे। इसके साथ ही साथ उनको मुख्य मंत्री के रूप में इस प्रदेश को संभालने का भी अवसर मिला और मुख्य मंत्री की हैसियत से उन्होंने जो भी काम किये उनको कभी इस प्रदेश की जनता नहीं भुला सकती। एक स्वतन्त्रता संग्राम के योद्धा के रूप में, समाज सुधारक के रूप में जिस तरह से उन्होंने काम किया, उनके निधन से आज सारा देश और प्रदेश दुखी है।

जब मुझे उनके निधन का समाचार मिला तो मैं स्तब्ध रह गया और यह सोचने लगा कि जिस व्यक्ति की छाप मेरे ऊपर ही नहीं बल्कि बहुत से लोगों

के ऊपर पड़ी है, मुख्य मंत्री के रूप में सहकारिता मंत्री के रूप में, समाजसेवी के रूप में, संसदीय परम्पराओं के निष्णात पंडित होने के नाते जो कार्य उन्होंने किये हैं, उस पर चलकर लोग अपने को सुधारने का काम करेंगे ।

यह भी संयोग है कि अगस्त, 1930 में जिस तरह से वह राजनीति में आये, कई बार जेल यातनायें सहीं और अंत में आते-आते उनकी जीवन यात्रा, राजनैतिक जीवन यात्रा अगस्त में ही समाप्त हुई । आज उनके सारे कामों को, उनकी विचार धारा को और जिस तरह से उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक जीवन में कार्य किया उनका स्मरण करके, उनके न रहने से हमें बहुत तकलीफ हुई है । मेरा उनका बहुत नजदीका का संबन्ध रहा, मुख्य मंत्री की हैसियत से और उनके साथ काम करने के नाते भी, आज मैं अपनी श्रद्धांजलि ऐसे व्यक्तित्व के प्रति समर्पित करता हूं, जिनके जीवन की छाप पूरे समाज पर पड़ी है । जो अन्य नेताओं ने उनके प्रति अपने विचार व्यक्त किये हैं और जो उनका त्यागमय जीवन रहा है, उनको जब स्मरण करते हैं, तो ऐसा अनुभव होता है कि आने वाले दिनों में यह क्षति पूरी नहीं होगी । मैं अपनी तरफ से और अपनी समता पार्टी की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मैं निवेदन करता हूं कि हमारी संवेदना उनके शोकसंतप्त परिवार तक पहुंचा दी जाय ।

*श्री देव कुमार यादव--

माननीय, 3 अगस्त का दिन हमारे प्रदेश और देश के इतिहास में एक बहुत गमगीन दिन के रूप में जाना जायगा । हम अत्यन्त भारी दिल और दुःखी मन से सदन के अन्दर और सदन के बाहर एक ऐसे व्यक्ति के निधन पर अपने दुःख का इजहार कर रहे हैं, जिन्होंने इस मुल्क की आजादी और इस मुल्क के निर्माण में बहुत बड़ी अहम भूमिका अदा की । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और जननायक नेहरू के नेतृत्व को स्वीकार करते हुए नवजवान बनारसी दास ने इस देश के मुक्ति संघर्ष में अपनी सारी जिन्दगी को समर्पित करने के पश्चात् इस प्रदेश के निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका अदा की । मैं इसको अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझता हूं कि 1977 से 1980 तक उनके चरणों में बैठ कर कुछ सीखने और कुछ करने का अवसर हमको मिला । आपकी गौरवमयी सीट पर बैठ कर उन्होंने जो निर्देश दिये, उसको जीवन भर भुलाया नहीं जा सकता ।

संसदीय शोध एवं संदर्भ समिति में वे मैं, जिसमें मैं भी सदस्य था, एक बार यह मसला उठा कि प्रशासनिक कुर्सियों पर बैठे हुए अधिकारियों द्वारा माननीय विधायकों की उपेक्षा की जाती है, उनके दफ्तर में जाने पर, उनका सम्मान नहीं किया जाता है । कुछ लोगों ने कहा कि कुछ विधायक भी ऐसे करते हैं, उनको थानों में नहीं जाना चाहिए, जहां पर उनको सम्मान नहीं मिलता है । उन्होंने यह कहा कि जिस मुल्क में गोबर के गणेश पूजे जाते हों, यदि कोई भी व्यक्ति अशिक्षित हो या शिक्षित हो, यह कोई प्रश्न नहीं उठता । वह विधायक अपने संघर्ष से, अपनी तपस्या और विश्वास के बल पर चुना जाता है । यह कोई आवश्यक नहीं है कि विधायक के पीछे पी० एच० डी० की डिग्री हो या वह पढ़ा-लिखा व्यक्ति हो । उन्होंने इस प्रश्न को बड़ी गम्भीरता के रूप में लिया और केन्द्र सरकार के आदेशों और प्रदेश सरकार के आदेशों की प्रति उपलब्ध कराने के लिए तत्कालीन सचिव श्री सत्यप्रिय सिंह को निर्देशित किया और माननीय मुख्य मंत्री को लिखा कि ऐसे परिपत्र, ऐसे आदेश जिलाधीशों को जारी किये जायं कि अगर कोई विधायक या कोई भी जनप्रतिनिधि चाहे वह प्रधान ही क्यों न हो, लोकतन्त्र की

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

गरिमा का दायित्व लेकर जाता है और अगर कोई अधिकारी उसको सम्मान नहीं देता है, तो उसको दंडित किया जाना चाहिए ।

उनके जीवन का सांगोपांग वर्णन करना चन्द मिनटों में सम्भव नहीं है । वह केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे, बल्कि उनकी रुचि बहुमुखी थी । वह विचार के क्षेत्र में, चिन्तन के क्षेत्र में बहुत ही अग्रणी थे । मान्यवर, उन्होंने मुक्ति संघर्ष के दौरान शोषित, पीड़ित और त्रसित जनता की दास्तानें कहीं । आजादी के बाद इस मुल्क को बनाने के लिए, गरीब जनता की भावनाओं को व्यक्त किया । लेकिन वह इस गरीब जनता की इस दास्तान को कहते-कहते ही सो गये "तुम्हीं सो गए दास्तां कहते-कहते" "जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु" जो मनुष्य पैदा होता है उसका अन्त भी होता है । मान्यवर, मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से आप से निवेदन करूंगा कि उनके शोक-संतप्त परिवार को हमारी और हमारे दल की संवेदनायें भेजने की कृपा करें ।

श्री रामआसरे वर्मा--

मान्यवर, स्वर्गीय बनारसी दास जी के बारे में जो उद्‌गार माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल ने व अन्य नेताओं ने व्यक्त किए हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, एक बेजोड़ व्यक्तित्व, एक बेजोड़ प्रतिभा हमारे प्रदेश से, हमारे बीच से उठ गयी । उनके व्यक्तित्व के बारे में उनकी प्रतिभा के बारे मे वर्णन किया जा सके ऐसे शब्द मैं अपने पास नहीं पाता हूं । सन् 1977 में जिस समय, वह अध्यक्ष की कुर्सी पर विराजमान थे उनके संरक्षण में मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था, वहां पर बैठने का । उस पीठ से मान्यवर, जिस तरह के निर्णय, जिस तरह की व्यवस्थायें निष्पक्ष रूप से उन्होंने दी हैं, वह निर्णय हमारे संसदीय इतिहास को और भी धनी बना देते हैं। मुख्यमंत्री के रूप में उनकी एक गर्जना मुझे अभी तक याद है । जिस समय राजनीतिक संकट से देश और प्रदेश गुजर रहा था, सारे प्रदेश की भावनाओं को उन्होंने परखा और इसी विधान सभा में उन्होंने गर्जना की "उत्तर प्रदेश किसी की जागीर नहीं, मुख्य मंत्री किसी का गुलाम नहीं" आज भी जब यह गर्जना याद आती है तो, मुख्य मंत्री बनारसी दास जी का चेहरा सामने आ जाता है । एक मुख्य मन्त्री के रूप में सदस्यों के साथ ऐसा सम्पर्क रहता था कि कोई भी व्यक्ति आश्चर्य में पड़ जाएगा ।

मान्यवर, मुझे याद है एक-एक कार्यकलाप की जानकारी उनको रहती थी । अगर साढ़े बारह बजे भी उनको टेलीफोन किया गया तो उन्होंने खुद अटैंड किया होगा । ऐसे व्यक्तित्व को, ऐसी प्रतिभा को भुलाया नहीं जा सकता है । आज वह हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनके दिखाए हुए रास्ते हमारे बीच में हैं और इस प्रतिभा के प्रति सच्ची श्रद्धांजली तभी अर्पित हो सकती है जब हम उनके दिखाये हुए रास्तों पर चलने का संकल्प लें । इसी के साथ में निवेदन करूंगा कि हमारे समुदाय की तरफ से हमारे शोकोद्‌गार उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री अशोक बाजपेयी--

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल अन्य दलों के माननीय नेताओं ने श्रद्धेय बनारसी दास जी के प्रति जो भावनायें व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, आज यह विश्वास ही नहीं होता है कि श्रद्धेय बाबू जी हमारे बीच में नहीं रहे । 9 जून को वे बंगलौर सरदार पटेल ट्रस्ट की बैठक में सम्मिलित होने के लिये गये थे । उनके दो दिन पूर्व 6 तारीख को मैं उनके साथ काफी देर तक रहा । लेकिन वहां जाने के बाद ऐसी बीमारी शुरू हुई कि दुबारा वह स्वस्थ नहीं हुए । वहां उन्हें बुखार आया और उसके बाद वह दिल्ली आ गये । पता नहीं कैसी बीमारी थी कि

जिस दिन से उसने घेरा डाला उसके बाद वह स्वस्थ नहीं हो सके। यह कभी सोचा नहीं गया था कि ऐसे महामानव को इतनी जल्दी हमें श्रद्धांजलि देनी होगी। उनसे काफी अपेक्षायें थीं, काफी आशायें थी इस प्रदेश को। कम से कम हमारे जैसे लोगों को जिनको उनका संरक्षण प्राप्त था।

विद्यार्थी जीवन से मैं उनसे जुड़ा और आज तक उनके साथ जुड़ा रहा मान्यवर, वह विचारक थे, हम प्रचारक थे हमेशा विश्वास रहता था कि एक संरक्षण है, एक साया है। उनके उठ जाने के बाद आज असहाय और सूनापन महसूस हो रहा है। प्रदेश के लिये वह सारे जीवन भर काम करते रहे। राजनीतिक जीवन में जो परम्परायें और मर्यादायें उन्होंने कायम की यह हमेशा याद की जायेगी। 16 वर्ष की आयु में जब वह विद्यार्थी ही थे, तभी वह राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े और उनकी शिक्षा दीक्षा वहीं समाप्त हो गयी। जब तक देश आजाद नहीं हुआ वह लगातार संघर्ष करते रहे। वह कभी थके नहीं कभी रुके नहीं। वह एक दृढ़ निश्चयी थे, उन्होंने सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया जहां उनकी वाणी में नम्रता थी वहीं विचारों में दृढ़ता थी। जब उन्होंने कोई फैसला कर लिया और यह समझा कि यह फैसला सही है, तो फिर परिणाम चाहे जो कुछ हो, उसको अंजाम देने के लिये तत्पर रहे। वह चाहे जिस दल में रहे हों, उन्होंने कभी जनतांत्रिक मूल्यों पर अंकुश लगाने की बात नहीं की। अगर कोई बात जनतंत्र के खिलाफ कही गयी या गलत बात कही गयी तो फिर चाहे जितने बड़े नेता ने वह बात कही हो उसका वह खुलकर विरोध करते थे। जिस पीठ पर मान्यवर, आज आप बैठे हैं इस अध्यक्ष पीठ से जो उन्होंने व्यवस्थायें दीं निर्णय दिये वह संसदीय इतिहास की अमर निधि रहेगी। अध्यक्ष चुने जाने के बाद अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा था कि सदन को एक व्यक्ति का भी अगर मुझ पर विश्वास नहीं रहेगा तो मैं अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दूंगा। इससे उन्होंने अन्त तक निर्वाह किया।

अध्यक्ष पीठ से जो स्वर्गीय टंडन जी और खेर जी मर्यादायें कायम की थीं, उनको शक्ति देने का काम किया। अध्यक्ष पीठ के उनके निर्णय और व्यवस्थायें संसदीय इतिहास की धरोहर बनेंगी। उन्होंने मुख्य मन्त्री के रूप में अपनी प्रशासनिक क्षमता और अपनी अद्भुत शक्ति का परिचय दिया। ऐसे कठोर समय में प्रदेश की जिम्मेदारी उनको सौंपी गयी थी, लेकिन उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय और दूरदृष्टि से प्रदेश का सही संचालन किया। जो ज्यादा से ज्यादा हो सकता था, उन्होंने प्रदेश के लिये किया। अगर कोई रिक्शा वाला भी अपनी शिकायत लेकर आया तो वह यह नहीं कहते थे कि यह मेरे स्तर का काम नहीं है, बल्कि जिस से काम होने वाला होता था उस अधिकारी को वह काम देते थे जब वह इस सदन में नेता सदन के रूप में और तिवारी जी नेता विरोधी दल के रूप में बैठते थे उस समय जो उनकी तर्कपूर्ण बात और पक्ष तथा विपक्ष में जो चर्चा हुई है, वह संसदीय इतिहास की अमूल्य निधि है।

श्रद्धेय बाबू जी जैसे व्यक्ति हमारे राजनीतिक जीवन से उठते जा रहे हैं। श्रद्धेय बाबू जी से राजनीतिक कार्यकर्ताओं को, हम जैसे कार्यकर्ताओं को कितना सम्मान मिलता था कितना स्नेह मिलता था। मुख्य मन्त्री जैसे बड़े पद पर रहने के बाद भी उन्होंने कार्यकर्ताओं से अलग अपने को महसूस नहीं किया उनमें अद्भुत संगठन क्षमता थी। छोटे-छोटे कार्य को करने के लिये वह तत्पर रहते थे। आज हमारे बीच में वह नहीं रहे, मैं भारी मन से, दुःखी मन से संवेदना व्यक्त कर रहा हूं और आपसे अपेक्षा करता हूं कि हमारी और हमारे दल की संवेदनाएं उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष—,

माननीय बनारसी दास जी आज हमारे बीच में नहीं रहे। हमे बड़ा दुख ह कि लखनऊ में होते हुए भी अस्वस्थ होने के कारण, मैं उनके अंतिम संस्कार में नहीं पहुंच सका। मेरा दुर्भाग्य है कि आज मेरे कार्यकाल में उनके लिये श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है। हमें और इस सदन को उनकी याद हमेशा ताजा रहेगी। कहां नहीं बैठे वह, किस जगह नहीं बैठे। जहां तक उनके निर्णय लेने की समझ की बात है, काफी कम लोगों के पास ऐसा होता है। वह निडर थे। डरते नहीं थे। उनकी सेवाओं की आप सबको भली-भांति जानकारी है। मेरा उनके साथ काफी निकट का सम्बन्ध रहा है और आज वह हमारे समक्ष नहीं रहे। हम आप सब दो मिनट मौन खड़े होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट के लिये मौन खड़े हुए।)

श्री अध्यक्ष—

आप लोग अपना स्थान ग्रहण करें। सदन की संवेदनाएं उनके परिवार को भेज दी जायेंगी।

अब हम उठते हैं, कल 11-00 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन मध्यान्ह 12 बजकर 5 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

लखनऊ :
5 अगस्त, 1985

भाल चन्द्र शुक्ल,
सचिव,
विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

(श्री० एस० यू० पी०-'33 वि० सभा—9-9-85—813पी० डी०)